आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा

विषय - राजनीति विज्ञान

स्नातक प्रतिष्ठा, Paper VI Part III

डॉ० उमेश चंद्र शुक्ल
एसो० प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत

कौटिल्य एक व्यवहारवादी चिंतक है। राजनीति, राज्य, शासन व्यवस्था आदि के क्षेत्र में उसके समस्त दृष्टिकोण व्यवहारिकता पर आधारित हैं, कोरे आदर्श पर नहीं। उसने राज्य के सप्तांग सिद्धांत के अन्तर्गत भी राज्य के सात तत्वों का उल्लेख का न केवल व्यवहारिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है अपितु वर्तमान समय के राज्य के तत्वों के व्याख्याकारों से उच्चतर सोच का भी परिचय दिया है। कौटिल्य के सप्तांग के सात तत्व हैं — स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग कोष, दंड और मित्र। इनका वर्णन निम्न रूपेण किया जा सकता है।

(1) स्वामी — कौटिल्य के अनुसार स्वामी या राजा राज्य का प्रधान है। शासन व्यवस्था की वह धुरी है। राजा के चारित्रिक गुणों एवं नीति पर ही राज्य की सफलता निर्भर करती है। वर्तमान समय में राज्य का तत्व संप्रभु कौटिल्य के 'स्वामी' में ही निहित है। उसकी सक्रियता शासन को गति प्रदान करती है। कौटिल्य राजा की योग्यता, दुर्गुणों से बचने के उपाय तथा दैनिक कार्यक्रमों का भी वर्णन किया है। कौटिल्य ने यह भी बतलाया है कि राजा के दो मुख्य कर्तव्य हैं — प्रजाजनों के हित और सुख पर ध्यान देना और अन्य राज्यों के क्रियाकलापों पर तीक्ष्ण दृष्टि रखना।

(2) अमात्य — राज्य का दूसरा आवश्यक तत्व अमात्य है। अमात्य का संबंध केवल मंत्री से नहीं बल्कि शासन व्यवस्था में लगे सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों से है। इस प्रकार राज्य के तत्वों में जो स्थान आज 'सिविल' का है वही स्थान कौटिल्य के 'अमात्य' का है।

Scanned with CamScanner

कौटिल्य के अनुसार अमात्य - सामर्थ्यवान, बुद्धिमान, गुणवान, विश्वासपात्र तथा अनुभवी होना चाहिए। इसी प्रकार प्रधानमंत्री कुलीन, बुद्धिमान, उत्साही, प्रभावशाली, कष्ट सहिष्णु, धैर्यवान, आरोग्यवान तथा गर्वरहित होना चाहिए। कौटिल्य मंत्रिपरिषद की संख्या पर कुछ नहीं कहा है किन्तु राजा को परामर्श दिया है कि उसे तीन-चार मंत्रियों से ही परामर्श लेना चाहिए। कौटिल्य के अनुसार अमात्य का कार्य राजा को परामर्श देना विकासात्मक कार्य, राज्य की रक्षा का उपाय तथा राजकोष की वसूली करना है।

(3) जनपद - कौटिल्य के सप्तांग का तीसरा तत्व जनपद है जिसमें आधुनिक भाषा के भू-भाग तथा जनसंख्या तत्व समाहित हैं। उनके अनुसार जनपद के अभाव में राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। कौटिल्य का जनपद गाँव, संग्रहण, खार्वटिक, द्रोणमुख, एवं स्थानीय में बँटा है। अर्थात ये सभी जनपद की प्रशासनिक इकाई है। कौटिल्य ने जनसंख्या या क्षेत्रफल पर कोई विचार नहीं दिया है फिर भी यह कहा जा सकता है कि वह मजबूत, समूह, तथा एकतावद्ध जनपद का समर्थक है।

(4) दुर्ग - कौटिल्य के सप्तांग का चौथा तत्व दुर्ग है। इसका संबंध राज्य की सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था से है। इसके लिए स्थान-स्थान पर दुर्ग का निर्माण आवश्यक है। कौटिल्य चार प्रकार के दुर्ग का उल्लेख करता है -

(i) औदक दुर्ग - चारो ओर जल से घिरा हुआ।
(ii) पर्वत दुर्ग - पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ।
(iii) धान्वन दुर्ग - ऊसर प्रदेश (मरुभूमि में बना हुआ दुर्ग)।
(iv) वन दुर्ग - वन दुर्ग जंगल में बनाया जाता है।

औदक और पर्वत दुर्ग राज्य की सुरक्षा में तथा धान्वन एवं वन दुर्ग राज्य की सुरक्षा में सहायक होते हैं।

Scanned with CamScanner

5. कोष – कौटिल्य के सप्तांग का एक प्रमुख तत्व कोष है। इसका संबंध आर्थिक तत्व से है। राज्य की कार्य क्षमता, प्रगति एवं सुरक्षा कोष पर निर्भर करती है। राजा का कार्य है कि राज्य में प्रचुर कोष बना रहे। कौटिल्य का यह भी सुझाव है कि कोष का संग्रह धर्मपूर्वक एवं न्यायसंगत विधि से होना चाहिए।

(6.) दंड – सप्तांग सिद्धांत का महत्वपूर्ण तत्व दंड है। इसका संबंध सैन्य बल के प्रबंधन से है। सेना राज्य की सुरक्षा का प्रमुख साधन है। कौटिल्य के अनुसार सैनिकों में स्वामिभक्ति, राज्य के प्रति निष्ठावान्, सैन्य शक्ति में पारंगत तथा निर्भिक होना चाहिए। राजा को भी सैन्य परिवारों की आवश्यक सुख सुविधा पर ध्यान देना चाहिए।

(7.) मित्र- ~~सप्तांग का तत्व~~ विदेश नीति के प्रबंधन की आवश्यकता को देखते हुए कौटिल्य ने अपने सप्तांग सिद्धांत में मित्र का उल्लेख किया है। राजा को चाहिए कि वैसे राज्यों से मित्रता करें जो आवश्यकता पड़ने पर सहायक हो। कौटिल्य ने पारिवारिक मित्रता पर बल दिया है।

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत राज्य के तत्वों को स्पष्ट करने में ज्यादा व्यवहारवादी है। इन तत्वों में कोष, मित्र, दंड और दुर्ग की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। फिर भी राज्य के तत्वों के आधुनिक आलोचकों ने इसे नकारा है। कौटिल्य का यह चिंतन ज्यादा प्रासंगिकता का परिचय देता है।

[signature]